Regarding the issues of Tribal people

ADV. GOWAAL KAGADA PADAVI (NANDURBAR): Thank you Madam Chairperson. Please give me three minutes to speak.

सर्वप्रथम, सभापति महोदया, मैं आपका धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ कि आपने मुझे विश्व आदिवासी दिवस के पुनीत अवसर पर अपनी बात रखने की अनुमति दी ।

विश्व आदिवासी दिवस हर वर्ष 9 अगस्त को विश्व के आदिवासी जनों के अधिकारों की रक्षा और समर्थन के लिए मनाया जाता है । आज का दिन आदिवासी समुदायों के महत्वपूर्ण योगदान और उपलब्धियों को मान्यता देने का अवसर है जो एक बेहतर संसार बनाने में सहायक है । यह अवसर हमें आदिवासी जनों द्वारा दुनिया में जो सामाजिक धरोहर, परंपराएँ, भाषाएँ और अनुभव जोड़े गए हैं, उन्हें मनाने और संजोने का अवसर देता है । यह शुभ दिन आदिवासी समुदाय के बीच एकता विकसित करने और व्यापक लोगों में जागरूकता बढ़ाने की उम्मीद करता है ।

परंतु, दुर्भाग्य से, आज वास्तविकता अलग है । भारत में आदिवासी जनों की समस्याएँ बहुत हैं, जिसमें सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक और स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दे शामिल हैं । आदिवासी छात्रों की ड्रॉपआउट दर अत्यधिक ऊँची है, विशेष रूप से माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों पर । आदिवासी क्षेत्रों में बाल विवाह एक जटिल सामाजिक समस्या है । स्वास्थ्य के संदर्भ में आदिवासी आबादी की बड़ी समस्याएँ हैं । ऐसे स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों की कमी है जो अनुसूचित क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रशिक्षित और तैयार हों । यह मुद्दा आदिवासियों के लिए बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण बाधा बन गया है । अधिकांश आदिवासी गरीब हैं । अधिकांश आदिवासियों का प्राथमिक व्यवसाय शिकार, संग्रहण, और कृषि है, जिससे न के बराबर मुनाफा मिलता है ।

सभापति महोदया, आदिवासी लोग प्रकृति की पूजा करते हैं और अपनी दैनिक दिनचर्या में पर्यावरण संरक्षण का पालन करते हैं । उनके लिए प्रकृति की रक्षा सबसे पहले आती है । प्रकृति उन्हें आहार उपलब्ध कराती है और प्रकृति उनकी रक्षा भी करती है । आदिवासी नृत्य, त्योहार और भोजन भी बहुत अनोखे और असामान्य होते हैं । ऐसे कई आदिवासी गीत, नृत्य, कहानियाँ, लोककथाएँ हैं जिनका दस्तावेजीकरण किया गया है और अन्य का दस्तावेजीकरण किया जाना बाकी है ।

आदिवासी लोग अभी भी अपने संवैधानिक अधिकारों और विशेषाधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं । आदिवासी लोग भूमि की हानि, जंगलों की समस्याएँ, सड़कों की कमी, नेटवर्क एक्सेस और मुख्यधारा के विकास के कई मुद्दों का सामना कर रहे हैं । सरकार इन समस्याओं को पूरी तरह से समझने में सफल नहीं हो पा रही है ।

समय आ गया है कि हम आदिवासी मुद्दों को समझने, संवेदनशील और दृढ़ निश्चयी बनने की शपथ लें । केवल तभी विश्व आदिवासी दिवस मनाने का कोई अर्थ होगा । मैं एक बार फिर भारत और विश्व के सभी आदिवासी भाई-बहनों को विश्व आदिवासी दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ । मैं निवेदन करता हूँ कि 9 अगस्त को नेशनल हॉलीडे के रूप में डिक्लेयर किया जाए ।